

अभ्यास प्रश्न-पत्र-1 (उत्तर)

1.

खंड-‘क’ (अपठित बोध)

- (अ) (i) (घ) कथन 3 और 4 सही हैं।
(ii) (घ) डब्ल्यू० एच० ओ०
(iii) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(iv) बच्चों को आदर्श शिक्षा देने के लिए हमें उन्हें संयुक्त और बड़े परिवार के साथ जोड़ना चाहिए।
(v) मनुष्य देश, शहर या गाँव के किसी भी हिस्से में रहे, खुशी उसी घर में आती है जहाँ एकजुट परिवार होता है और उनके सुख-दुख साझा होते हैं।
- (ब) (i) (क) जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखने के लिए प्रेरित करना।
(ii) (ख) दुख के अंधकारपूर्ण घटनाओं से
(iii) (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(iv) सात रंगों से बनी — लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, इंडिगो और वायलेट आकृति जो बारिश के बाद आकाश में दिखाई देता है।
(v) मनुष्य अपने जीवन के दुखों एवं कष्टों को इस विश्वास के आधार पर सहन कर लेता है कि जीवन में दुखों के बाद सुख आता है।

2.

खंड-‘ख’ (व्यावहारिक व्याकरण)

- I. (i) उपसर्ग किसी भी सार्थक शब्द के प्रारंभ में जोड़े जाने वाले वे अविकारी शब्दांश हैं जो शब्द के प्रारंभ में लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं।
(ii) भर-उपसर्ग, पूर-मूल शब्द
(iii) आजन्म
(iv) प्रत्यय
(v) वाला
- II. (i) समास के छह भेद होते हैं।
(ii) तत्पुरुष समास में उत्तर-पद प्रधान होता है।
(iii) द्वंद्व समास
(iv) बहुव्रीहि
(v) पंचतंत्र
- III. (i) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद होते हैं।
(ii) बच्चे निबंध लिख रहे हैं।
(iii) सार्थक शब्दों का ऐसा व्यवस्थित समूह जो पूरा आशय स्पष्ट करता है, वह वाक्य कहलाता है।
(iv) निषेधवाचक
(v) संकेतवाचक
- IV. (i) जहाँ पर एक ही वर्ण की आवृत्ति बार-बार होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
(ii) यमक अलंकार
(iii) मंगन को देख पट देत बार-बार
(iv) अनुप्रास अलंकार
(v) यमक अलंकार

3.

खंड-‘ग’ (पाठ्यपुस्तक एवं पूरक पाठ्यपुस्तक)

- (अ) I. (i) (क) लाल
(ii) (ख) लहासा की यात्रा के दौरान
(iii) (घ) उनका चेहरा गुस्से से लाल हो गया था।
(iv) (क) सरल, स्नेही, मृदु स्वभाव वाले
(v) (ग) गुस्सा जल्दी आना और जल्दी ही उतरना
- II. (i) तिब्बत में ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ हैं। सोलह-सत्रह हजार फीट की ऊँचाई होने के कारण उनके दोनों तरफ़ मीलों तक कोई गाँव नहीं है। नदियों के मोड़ और पहाड़ों के कोनों के कारण दूर-दूर तक कोई आदमी दिखाई नहीं देता। कहीं-कहीं पहाड़ों पर न तो बर्फ़ है, न ही हरियाली। उत्तर की तरफ़ बहुत कम बर्फ़ वाली चोटियाँ दिखाई पड़ती हैं। सर्वोच्च स्थान पर डोंड़े के देवता का स्थान है, जो पत्थरों के ढेर, जानवरों के सींगों और कपड़े की रंग-बिरंगी झंडियों से सजाया जाता है। मेरा शहर मैदानी इलाकों में होने के कारण इससे पूरी तरह भिन्न है।
- (ii) प्रेमचंद सीधे तथा सरल स्वभाव वाले इंसान थे। दिखावा करना उन्हें नहीं आता था, न ही वे ऐसा करना चाहते थे और उन्हें दिखावे में विश्वास भी न था। उन्हें समाज की जिन बुराइयों को प्रकट करना होता, उन्हें वे लेखन के माध्यम से प्रकट कर देते थे।
- (iii) गांधी जी ने उपभोक्तावादी संस्कृति को देखकर कहा था कि हम बाहरी संस्कृतियों के स्वस्थ सांस्कृतिक प्रभावों को ग्रहण करने के लिए अपने खिड़कियाँ-दरवाजे खुले रखें, पर अपनी बुनियाद पर कायम रहें। उपभोक्तावादी संस्कृति हमारी सामाजिक नींव को हिला रही है। यह एक बहुत बड़ा खतरा है, भविष्य के लिए यह बड़ी चुनौती है। हमें इसका सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।
- (iv) लेखिका महादेवी वर्मा ने अपनी माँ के व्यक्तित्व की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि वे हिंदी तथा संस्कृत भाषाओं की जानकारी रखती थीं। वे स्वयं भी पद लिखती थीं और उन्हें गाती थीं। वे धार्मिक विचारों वाली विदुषी महिला थीं।
- (ब) I. (i) (ख) मखमल के
(ii) (घ) ‘ख’ तथा ‘ग’ दोनों सही हैं
(iii) (ग) चाँदी की जाली के समान
(iv) (क) जैसे हरा-हरा खून प्रवाहित हो रहा हो
(v) (ख) निर्मल, नील
- II. (i) किसी भी व्यक्ति की पहचान उसके कर्मों से होती है, कुल से नहीं। अपने कर्मों से ही व्यक्ति प्रसिद्ध या अप्रसिद्ध होता है। उच्च कुल में जन्म लेकर नीच कर्म करने वाला निंदनीय माना जाता है। इसलिए व्यक्ति द्वारा अच्छे और नेक कार्य करने पर बल दिया जाता है। शराब निंदनीय मानी जाती है, चाहे उसे सोने के कलश में ही क्यों न रखा जाए!
- (ii) हमारे पाठ्यक्रम के ‘कैदी और कोकिला’ कविता में ब्रिटिश शासन के विषय में बताया गया है। ब्रिटिश सरकार के शासन की तुलना तम के प्रभाव से की गई है, क्योंकि उसके दमन-चक्र ने जनता को झकझोर कर रखा दिया था। उसने जनता के मौलिक अधिकारों को भी छीन लिया। जनता का सब प्रकार से शोषण किया गया। देश की अधिकांश चल संपत्ति को विदेश भेज दिया। उसके सभी कार्य भारतीय जनता के लिए काले थे।
- (iii) ‘मेघ आए’ कविता में आकाश में बादल और गाँव में मेहमान के आने का रोचक चित्र प्रस्तुत किया गया है। वर्षभर की प्रतीक्षा के बाद मेहमान के गाँव में आने पर प्रसन्नता, आदर, उत्कंठा और उलाहना के वातावरण का वर्णन है। शहरी मेहमान के आगमन पर सारे गाँव में खुशी की लहर दौड़ गई। शहरी पाहुन के आने पर हवा नाचने लगती है। घरों के दरवाजे और खिड़कियाँ खुल गई हैं। लोग पाहुन को देखने के लिए उमड़ पड़े। गाँव के बड़े-बूढ़े (पीपल के रूप में) आगे बढ़कर मेहमान का स्वागत-सत्कार कर रहे हैं।
- (iv) ब्रज की गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम है। वे श्रीकृष्ण की मुरली की तान सुनने के अपने लिए अपने सिर पर मोर पंख रखने, गले में गुंजों की माला पहनने, पीतांबर ओढ़ने तथा लाठी लेकर ग्वालों के साथ गाएँ चराने के लिए तैयार हो गई।

- III. (i) बाढ़ के दृश्य को देख लेखक सोचते हैं कि उनके पास एक मूवी कैमरा तथा टेप-रिकॉर्डर होता, तो वे सब कुछ उसमें कैद कर लेते। बाढ़ तो वे बचपन से ही देखते आए थे, पर पानी का इस तरह आना उन्होंने पहले नहीं देखा था। वे सोचते हैं कि अच्छा हुआ पानी रात को नहीं आया, नहीं तो डर के मारे उनका बुरा हाल हो जाता। देखते-ही-देखते सब कुछ पानी में डूब गया। काश उनके पास एक मूवी कैमरा होता, एक टेप रिकॉर्डर होता, तो ज़्यादा अच्छा होता। पास में एक कलम थी, वह भी चोरी हो गई। अंत में लेखक सोचते हैं कि अच्छा ही हुआ कि उनके पास कुछ नहीं है, क्योंकि तब वे बाढ़ के दृश्यों को कैमरे में या कलम द्वारा कैद करने में लग जाते और इस जीवंत घटना का वास्तविक अनुभव उन्हें नहीं होता। इन चीज़ों के अभाव के कारण ही उनका सारा ध्यान उसे महसूस करने में लगा, जो अधिक अच्छा हुआ।
- (ii) रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद का अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करना उचित नहीं है, बल्कि यह अतीत का महिमामंडन है। आज समाज के हर क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन आए हैं। समय परिवर्तनशील है। समय के साथ-साथ सोच, विचार तथा देखने के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आया है। आज रुपये की मूल्यवृद्धि के साथ-साथ उत्पादन क्षमता बढ़ी है। हर क्षेत्र में क्रांति आई है। शिक्षा के क्षेत्र में भी लड़कियाँ लड़कों से आगे निकल आई हैं। एकांकी में भी यह बताया गया है कि लड़कियों ने पुरुषों के एकाधिकार को तोड़ दिया है। समय की माँग भी यही है, इसलिए कभी भी अपने समय की तुलना वर्तमान समय से नहीं करनी चाहिए।
- (iii) 'शिक्षा बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'। लेखिका चाहती थीं कि सभी बच्चे शिक्षा प्राप्त करें। कर्नाटक के छोटे कस्बे बागलकोट में कोई ढंग का स्कूल नहीं था। लेखिका ने कैथोलिक बिशप से प्रार्थना की कि उनका मिशन सीमेंट कारखाने की आर्थिक मदद से एक प्राइमरी स्कूल खोल दें। उस प्रदेश में क्रिश्चियन जनसंख्या कम थी, इसलिए कैथोलिक बिशप ने स्कूल खोलने में असमर्थता दिखाई। लेखिका ने गैर-क्रिश्चियन बच्चों को भी शिक्षा पाने के लायक सिद्ध करते हुए अपना आग्रह जारी रखा। तब बिशप ने उनसे यह विश्वास दिलाने के लिए कहा कि वह स्कूल सौ वर्षों तक चलता रहेगा। वहाँ से सहायता न मिलने के कारण लेखिका ने स्वयं—अंग्रेज़ी-हिंदी-कन्नड़—तीन भाषाएँ पढ़ाने वाला प्राइमरी स्कूल खोला और कर्नाटक सरकार से उसे मान्यता भी दिलवाई।

4.

खंड-‘घ’ (रचनात्मक लेखन)

I. (i) इंटरनेट का अनोखा संसार

इंटरनेट के आविष्कार के साथ ही एक नए युग की शुरुआत हो गई है। इंटरनेट का तात्पर्य है—भीतरी जाल। इंटरनेट ने आज विश्व के हर क्षेत्र में अपनी धाक जमा ली है। यह अनेक सूचनाओं का संगठन है। आज किसी भी तरह की सूचना अथवा जानकारी इंटरनेट के माध्यम से पलक झपकते ही प्राप्त की जा सकती है। समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ, चलचित्र, संगीत, खेल इत्यादि ढेरों सामग्री आपके लिए इंटरनेट ही प्रदान करता है। सूचना एवं संदेश विश्व के किसी भी स्थान पर भेजे एवं प्राप्त किए जा सकते हैं। इंटरनेट के निरंतर विकास हेतु कई कंपनियाँ नित नवीन सॉफ्टवेयर के निर्माण में जुटी हैं। बैंकों की कार्यप्रणाली सरल हो गई है। आज आदमी जेब में पैसे की जगह कार्ड रखकर बाज़ार जाता है। पैसे का लेन-देन डिजिटल हो गया है। इस प्रकार इंटरनेट ने हमें सुरक्षा और सुविधा दोनों ही प्रदान की हैं और जीवन की जटिलता और असुविधा समाप्त हो गई है। कंप्यूटर शिक्षा आज अनिवार्य हो गई है, क्योंकि जीवन के हर क्षेत्र में इंटरनेट के माध्यम से ही कार्य होने लगे हैं। इंटरनेट के अनगिनत लाभ तो हैं, परंतु कुछ हानियाँ भी हैं। इंटरनेट का गलत इस्तेमाल भी होने लगा है। हिंसा एवं अश्लील दृश्य-श्रव्य सामग्री युवाओं को गलत राह पर ले जा सकती है। गलत संदेशों के आदान-प्रदान से समाज में हिंसा एवं अपराध को बढ़ावा मिलता है। अतः इंटरनेट का मानव-हित में सकारात्मक उपयोग एक वरदान की तरह है, किंतु हमें इसके दुरुपयोग को रोकना चाहिए।

(ii) आत्मनिर्भरता

आत्मनिर्भरता का अर्थ है—अपने पैरों पर खड़ा होना। अर्थात् अपने परिश्रम से अर्जित धन से जीवन-यापन करना। आत्मनिर्भरता ही सफलता का मूल मंत्र है। आत्मनिर्भर व्यक्ति ही घर-परिवार और समाज में सम्मान पाता है। जो व्यक्ति आलसी और निकम्मा होता है, वह समाज और देश के लिए एक बोझ के समान होता है। वह अपने निर्वाह के लिए आवश्यक साधन तक जुटाने में असमर्थ होता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति सदैव उत्साह से भरा रहता है। कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी वह निराश नहीं होता

तथा उस कठिनाता में भी वह सफलता की राह निकाल लेता है। आत्मविश्वासी व्यक्ति का दायरा बहुत विस्तृत होता है। वह स्वयं तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि देश की उन्नति तथा विकास कार्यों में भी उचित योगदान देता है और देश को आत्मनिर्भर बनाने में भी अपना अमूल्य योगदान देता है। आत्मनिर्भरता जीवन जीने की एक कला है। व्यक्ति को सदैव सजग और जागरूक रहकर निरंतर परिश्रम करना चाहिए। परिश्रम और आत्मविश्वास ही सफलता की कुंजी है, जिसके द्वारा आत्मनिर्भर बनकर समूचे संसार में व्यक्ति अपना परचम लहरा सकता है।

(iii) प्रदूषण की समस्या

प्रदूषण आधुनिक युग की प्रमुख तथा विकट समस्या है। यह विश्व की भयंकर समस्याओं में से एक है। इसके कारण समस्त भूमंडल प्रदूषित होता जा रहा है। प्रदूषण के कारण वायुमंडलीय तापमान में वृद्धि हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी विनाश की ओर बढ़ती जा रही है। प्रकृति में असंतुलन व्याप्त हो गया है। पृथ्वी पर मौसम-चक्र में गड़बड़ी उत्पन्न हो गई है। अल्पवृष्टि, अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि से जीवन-संकट उत्पन्न हो गया है। जल, वायु, भूमि तथा ध्वनि प्रदूषण हमारे वायुमंडल तथा भूमंडल का नाश करने में लगे हुए हैं, परंतु इसके ज़िम्मेदार हम स्वयं हैं। हमारी स्वार्थी प्रवृत्ति ने वनों का विनाश किया। बढ़ती जनसंख्या और अपनी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन ही इसका प्रमुख कारण है। बढ़ते औद्योगीकरण और शहरीकरण ने प्रदूषण को बढ़ावा दिया है। हमारा कर्तव्य है कि अधिक-से-अधिक वृक्ष लगाएँ तथा पर्यावरण को स्वच्छ रखने का प्रयास करें, तभी इस समस्या से छुटकारा मिल सकता है।

II. सेवा में,

प्रधानाचार्य

केंद्रीय विद्यालय

म. र. ल. नगर।

दिनांक : 18 फरवरी, 20xx

विषय : निर्धन छात्र-कोष से आर्थिक सहायता प्राप्ति के संबंध में।

मान्यवर,

कल मैंने स्कूल के सूचना-पट्ट पर सूचना पढ़ी थी कि योग्य छात्र-छात्राओं को निर्धन-कोष से सहायता देने हेतु प्रार्थना-पत्र आमंत्रित किए जाते हैं। तदनुसार मैं यह प्रार्थना-पत्र आपकी सेवा में भेज रहा हूँ।

मैं कक्षा नवीं (डी) का छात्र हूँ। मैंने आठवीं कक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त किए हैं। मेरे पिताजी एक प्राइवेट फ़र्म में कार्यरत थे। विगत पाँच माह से कंपनी में की गई छुट्टी के परिणामस्वरूप वे बेरोज़गार हो गए हैं। इस समय घर का खर्च तक चलाना कठिन हो रहा है। मेरी बहन भी इसी स्कूल की सातवीं कक्षा में पढ़ रही है। मेरे लिए आगामी मास की फ़ीस तक जमा कराना संभव नहीं है। आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे निर्धन छात्र-कोष से फ़ीस दिलाने की व्यवस्था कर दीजिए, जिससे मैं यह शिक्षण-सत्र पूरा कर सकूँ। आपकी अति कृपा होगी।

आपका आज्ञाकारी शिष्य

क०ख०ग०

अथवा

परीक्षा भवन

दिनांक : 7 जुलाई, 20xx

प्रिय मित्र अनीष,

सस्नेह अभिवादन।

कल ही तुम्हारे पिता जी के द्वारा ज्ञात हुआ कि तुम परीक्षा में असफल हो गए हो। पढ़कर मुझे बहुत दुख हुआ। मित्र! परिस्थितियों से जूझना सीखो और इस असफलता में केवल तुम्हारा दोष तो है भी नहीं। पहले माता जी की मृत्यु, तत्पश्चात् पिता जी की दुर्घटना

ने पिछले तीन-चार महीनों के लिए तुम्हारी पढ़ाई को पूरी तरह से अवरुद्ध कर दिया था। ईश्वर की कृपा से पिता जी अब ठीक हैं और तुम कठोर परिश्रम करके अगली बार प्रथम स्थान प्राप्त करोगे, ऐसा मुझे पूर्ण विश्वास है। असफलता आलसियों को झुकाती है, तुम्हारे जैसे कर्मठ लोगों को नहीं। अतः निराश न होकर अभी से अपनी पढ़ाई में जुट जाओ, क्योंकि एक कहावत तुमने सुनी होगी कि 'कभी न गिरना गर्व की बात नहीं है, लेकिन सच्चा इंसान वही है, जो गिरकर सँभल जाए'। अतः दृढ़ संकल्प द्वारा निश्चित उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अपने प्रयासों को कार्यान्वित करना शुरू कर दो।

पिता जी की ओर भी ध्यान देना तथा स्वयं को भी अपने अध्ययन-कार्यों में डुबो देना। किसी भी कार्य में सहायता के लिए तुम बेझिझक मुझे पत्र लिखना।

तुम्हारा मित्र

क०ख०ग०

III.

ई-मेल

प्रेषक — sp.....@gmail. com

प्राप्तकर्ता — xyz.....@gmail. com

प्रतिलिपि (सी.सी.) — et.....@gmail. com

गोपनीय प्रतिलिपि — pqr.....@gmail. com

विषय— क्रिकेट प्रशिक्षण शिविर में दो दिन बाद भाग लेने की अनुमति के संदर्भ में।

महोदय

सहृदय

उपर्युक्त विषयांतर्गत सविनय निवेदन है कि मैं अ.ब.स हूँ। अगले रविवार से शुरू होने वाले क्रिकेट प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने के लिए मेरा चयन हुआ है। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण मैं रविवार को इस प्रशिक्षण शिविर में शामिल नहीं हो पाऊँगा। अतः आपसे विनम्र निवेदन है कि मुझे दो दिन बाद इस प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने की अनुमति प्रदान की जाए। मैं आपका अति आभारी रहूँगा। कृपया मेल स्वीकार की जाए।

सधन्यवाद

भवदीय

अ.ब.स.

अथवा

लघु कथा

मेरे बचपन की साहसिक घटना

मैं बचपन से ही बहुत शरारती स्वभाव का था। साहसिक कार्यों को करने में मुझे बहुत आनंद आता था। मैं चौथी कक्षा में एक बार गर्मी की छुट्टियों में अपने चचेरे भाई-बहनों और अपने माता-पिता के साथ सुंदरवन घूमने गया। हम लोग किसी गेस्ट-हाउस में ठहरे हुए थे। उसी गेस्ट-हाउस में दो परिवार और ठहरे हुए थे, जो मेघालय और पटना से आए थे। थोड़ी देर में सभी परिवारों के बच्चों में दोस्ती हो गई। दूसरे दिन सुबह ही हम सब तीन बड़ी जीप गाड़ियों में सवार होकर सुंदरवन के उस सघन वनप्रदेश में पहुँचे, जहाँ अक्सर बाघ दिखाई दिया करते थे। जंगल के बीचों-बीच एक छोटी-सी नदी बह रही थी। हमारे गाइड ने वहीं पर एक ऊँचे पेड़ पर मचान बँधवाया। हम सभी मचान पर चुपचाप बैठे थे। तभी अचानक पेड़ हिलते हुए-से दिखाई दिए। गाइड ने हमें सावधान कर दिया। हमने देखा कि एक सफेद बाघ नदी पर पानी पीने आया। उसने बड़ी सतर्कता से इधर-उधर देखा आवशस्त होकर पानी पीने लगा। पिताजी ने उसकी कई तस्वीरें लीं। पानी पीकर बाघ मेरे मचान के नीचे आकर बैठ गया। बाघ को देखकर मेरा साहस छूमंतर हो गया। गाइड ने मुझे आश्वासन दिया कि बाघ मचान तक नहीं पहुँच सकता है। करीब दो घंटे बाद बाघ वहाँ से चला गया। मैंने चैन की साँस ली और जीप पर सवार होकर गेस्ट-हाउस पहुँचा।

अथवा

- IV. यतिन – समीप, तुम्हें पता है, आजकल उत्तर प्रदेश में हमारा पड़ोसी जिला किन हालातों से गुजर रहा है?
- समीप – हाँ, मैंने कल टेलीविज़न में देखा था कि वहाँ बाढ़ आने से कितने लोग बेघर होकर सड़कों पर आ गए हैं।
- यतिन – समीप, मुझे लगता है, हमें इन बाढ़ पीड़ितों के लिए कुछ करना चाहिए।
- समीप – वह कैसे? क्या तुम्हारे दिमाग में कोई योजना है?
- यतिन – हाँ है। मैं जहाँ काम करता हूँ, वहाँ अपने साथियों से बात-चीत कर उन बाढ़-पीड़ितों के लिए कुछ रुपए इकट्ठा कर सकता हूँ।
- समीप – मैं भी अपने आसपास के लोगों से बातचीत कर वस्त्र एवं खाने-पीने की वस्तुओं का प्रबंध कर सकता हूँ।
- यतिन – दो दिन बाद हम दोनों तुम्हारे घर पर फिर से मिलेंगे।
- समीप – ठीक है, तो फिर मिलने के लिए अभी चलते हैं ताकि हम मुसीबत में फँसे लोगों की ज़ल्द से ज़ल्द सहायता कर सकें।

अथवा

सूचना

केंद्रीय विद्यालय, आर.के. पुरम् दिल्ली

चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन

तिथि— 28 जुलाई, 20....

सभी छात्रों को सूचित किया जाता है कि विद्यालय के प्रांगण में जनपदस्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

कार्यक्रम विवरण इस प्रकार है—

तिथि — 14 अगस्त, 20...

समय — प्रातः 10.00 बजे से 1.00 बजे दोपहर तक

स्थान — विद्यालय सभागार

विषय — 'स्वच्छ भारत अभियान'

इस प्रतियोगिता में भाग लेने के इच्छुक छात्र तिथि 10 अगस्त, 20... तक प्रतिभागिता प्रपत्र भरकर विद्यालय में जमा करवा दें। आवश्यक सामग्री, चार्ट पेपर, रंग आदि छात्र स्वयं लाएँगे। छात्रों को स्कूल की ओर से केवल ड्राइंग बोर्ड दिया जाएगा।

छात्र सचिव

क.ख.ग.